" महिला उद्यमियों की ग्रामीण समाज में भूमिका "

एम. ए. अंतिम चतुर्थ सेमेस्टर (राजनीति विज्ञान)

में प्रायोगिक कार्य हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रतिवेदन

सत्र-2023-24

निर्देशक

श्री भूपेन्द्र कुमार

(सहा. प्राध्यापक)

राजनीति विज्ञान विभाग

श्रीमती गिरजा वर्मा

(अतिथि व्याख्या)

राजनीति विज्ञान विभाग

खिलेश कुमार

शोधकर्ता

खिलेश कुमार

एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर

(राजनीति विज्ञान)

रोल न.- 231040570015

मो. न.- 6268188308

शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय

गुण्डरदेही, जिला-बालोद (छ.ग.)

आभार

सर्वप्रथम मैं विद्या की आराध्य देवी माँ सरस्वती को वंदन करता हूँ। जिनकी असीम कृपा से मुझे शास. शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही में अपनी उच्च शिक्षा के श्रृंखला में बढ़ते हुए एम.ए. (राजनीति विज्ञान) में लघु शोध कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

लघु शोध कार्य को करने में हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी. आर. मेश्राम एवं समस्त प्रध्यापकगण तथा अतिथि प्राध्यापकों का सदा आभारी रहूँगा। जिनके मार्गदर्शन में सदा सहयोग तथा सत्र भर ज्ञान प्राप्त किया।

मैं अपने राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष श्री भूपेन्द्र कुमार और श्रीमती गिरजा वर्मा का सदा आभारी रहूँगा। जिन्होने इस कार्य को पूर्ण करने में अपना सहयोग प्रदान किया और शोध संबंधी जानकारियाँ प्रदान की तथा जिनके निर्देशन में लघु शोध कार्य पूर्ण किया।

मैं अपने माता पिता का हृदय से धन्यवाद करता हूँ जिन्होने अध्ययन के प्रति लगाव रखने का आशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही सभी सहपाठियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने मेरे इस शोध कार्य को पूर्ण करने में अपना सहयोग प्रदान किया।

अंत मै उन ग्रामीण नागरिकों व महिलाओं का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने उत्तरदाता के रूप में तथा औपचारिक और अनौपचारिक विचार विमर्श के द्वारा इस शोध कार्य में सहयोग किया और शोध कार्य को सफल बनाया।

खिलेश कुमार

शोधकर्ता

स्थान– गुण्डरदेही

दिनाँक– 02-05-24

खिलेश कुमार
एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर राजनीति विज्ञान
शास. शहीद कौशल यादव महाविद्यालय
गुण्डरदेही, जिला–बालोद (छ.ग.)

घोषणा-पत्र

मैं घोषणा करता हूँ, कि मैं " **महिला उद्यमियों की ग्रामीण समाज में भूमिका** " शीर्षक की यह प्रोजेक्ट रिपोर्ट शास. शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही, जिला बालोद (छ.ग.) के एम. ए. राजनीति विज्ञान चतुर्थ सेमेस्टर परीक्षा हेतु सत्र 2023-2024, श्री भूपेन्द्र कुमार (सहायक प्राध्यापक) के निर्देशन से तथा श्रीमती गिरजा वर्मा (अतिथि व्याख्याता) के मार्गदर्शन में पूर्ण किया गया है।

खिलेश कुमार

शोधकर्ता

खिलेश कुमार

एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर राजनीति विज्ञान

शास. शहीद कौशल यादव महाविद्यालय

गुण्डरदेही, जिला-बालोद (छ.ग.)

स्थान- गुण्डरदेही

दिनाँक- 02-05-24

विषय अनुक्रमानिका–

क्र.	पाठ्यक्रम	पृष्ठक्रमांक
1	प्रस्तावना	1
2	उद्देश्य	2
3	अध्ययन विधि	2
4	उद्यमिता क्या है?	2
5	ग्रामीण उद्यमिता क्यों जरूरी है?	3
6	महिला उद्यमिता	4
7	ऐतिहासिक परिपेक्ष्य	4
8	ग्रामीण महिला उद्यमियों की वर्तमान स्थिति	5–7
9	भारत में महिला उद्यमिता की पृष्ठभूमि	7–8
10	छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता	8–10
11	उद्यमिता विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका	11
12	उद्यमिता के जरिए ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण	12
13	महिला उद्यमियों के विकास के लिए सरकार की पहल	12–17
14	महिला उद्यमियों का मार्गदर्शन	17
15	पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं के समक्ष मौजूद चुनौतियां	18
16	ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमियों की प्रमुख समस्या	19
17	महिला उद्यमियों के उन्नयन हेतु उपाय	20
18	शोध कार्य	21–23
19	निष्कर्ष	24
20	संदर्भ ग्रंथ सूची	25

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि खिलेश कुमार ने शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही जिला बालोद (छ.ग.) में सन् 2023–2024 में प्रस्तुत लघु शोध प्रतिवेदन " **महिला उद्यमियों की ग्रामीण समाज में भूमिका** " के विशेष संदर्भ में एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (राजनीति विज्ञान) का छात्र की स्वतः लिखित मौलिक रचना है। यह लेखन कार्य मेरे निर्देशन में संपादित किया गया है। मेनें ने अपने योग्यतानुसार इसे अध्ययन किया और उचित रूप से संशोधित किया है।

विभागाध्यक्ष
श्री भूपेन्द्र कुमार
(सहायक प्राध्यापक)
राजनीति विज्ञान विभाग
शास. शहीद कौशल यादव महाविद्यालय
गुण्डरदेही, जिला–बालोद (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष-राजनीति विज्ञान विभाग
शास. शहीद कौशल यादव महाविद्यालय
गुण्डरदेही, जिला-बालोद (छ.ग.)

स्थान– गुण्डरदेही
दिनाँक–02/05/24

ग्रामीण उद्यमिता क्यों जरूरी है?

शहरी क्षेत्रों के विपरीत देश के ग्रामीण इलाकों में बेरोजगारी की समस्या ज्यादा गंभीर है। साथ ही, छिपी हुई और मौसमी बेरोजगारी जैसी चुनौतियां भी हैं। बड़े शहरों में पलायन की वजह से गांव खाली हो जाते हैं और ग्रामीण संसाधनों का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं हो पाता है। इसके अलावा, आधारभूत संरचना, बाजार और वित्तीय सुविधाओं की कमी से ग्रामीण इलाकों में आजीविका हासिल करने की चुनौती और गंभीर हो जाती है। असंगठित ढांचा और बाज़ार की कमी के कारण गांवों के प्रशिक्षित कारीगरों के लिए आजीविका हासिल करना बड़ी चुनौती है। साथ ही, ग्रामीण इलाके के लोगों की क्रयशक्ति भी कम हो रही है. जबकि शहरों में इसमें बढ़ोत्तरी हो रही है। देश के ग्रामीण इलाकों से जुड़े उत्पादन में पारंपरिक ग्रामीण उद्योगों का योगदान बेहद सीमित है। जाहिर तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों के औद्योगिक विकास में सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति और नई तकनीक ने अब तक बड़े पैमाने पर बदलावकारी भूमिका नहीं निभाई है। इन वजहों के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देना आवश्यक है. ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन और बेरोजगारी की समस्या से प्राथमिकता के आधार पर निपटा जा सके।

ग्रामीण उद्यमिता न सिर्फ लोगों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि इससे ग्रामीण समुदायों का जीवन स्तर भी बेहतर होता है और दूरदराज के इलाकों में भी समृद्धि देखने को मिलती है। साथ ही, यह समावेशी विकास के लिए भी गुंजाइश बनाती है। ग्रामीण उद्यमों का वजूद कायम रहे, इसके लिए नीतिगत स्तर पर असरदार ढंग से पहल करने की जरूरत है।

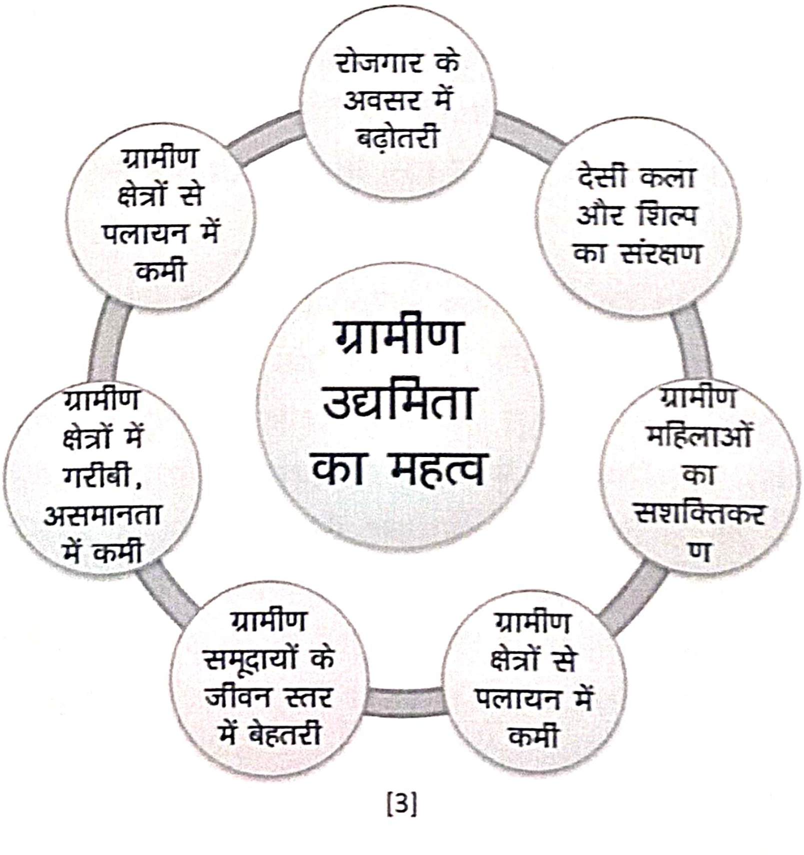

ग्रामीण महिला उद्यमियों की वर्तमान स्थिति

आज वर्तमान में पुरूष एवं महिलाओं में संवैधानिक एवं कानूनी दृष्टिकोण से लैंगिक आधार पर कोई भेद नहीं है। पहले महिलाएं केवल घरेलू क्रियाओं में संलग्न थीं। लेकिन जैसे–जैसे परिवर्तन हुआ। महिलाएं घर से निकल कर आ गई। आज महिलाओं का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। वास्तव में आज महिला ने उद्यमिता को अपने आर्थिक विकास का क्षेत्र के रूप विकसित किया है।विकास निर्माण में महिलाओं का विकास एवं सशक्तिकरण साथ जुड़े हुए हैं, जो एक स्वतंत्र समूह के रूप में भारत की कुल आबादी का लगभग 48.2 प्रतिशत हिस्सा बनाती है। महिलाएं आर्थिक विकास के साथ–साथ समाज का भी विकास कर रही है।

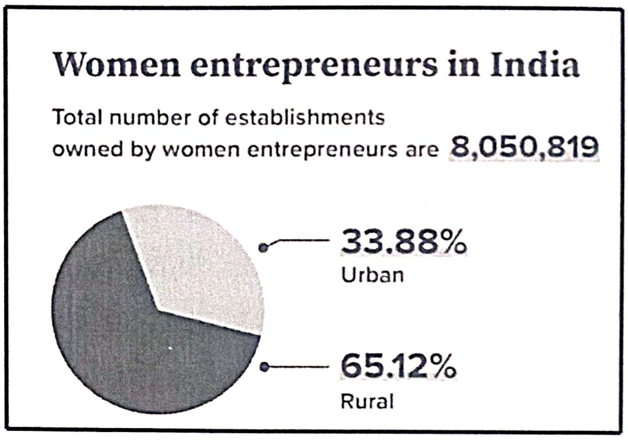

वर्तमान महंगाई के युग में कृषि कार्य पदार्थो की कीमत, प्राकृतिक आपदा, बाढ़ सूखा आदि के कारण ग्रामीण लोगों के जीवन बसर में कठिनाई होने लगी है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। उक्त समस्याओं को सुलझाने के लिए महिलाएं सरकारी नौकरी, स्वयं का व्यवसाय, मजदूरी तथा अन्य कार्यो में खुलकर सहयोग करने लगी हैं।

अब ग्रामीण परिवेश बदल चुका है, वर्तमान में प्रत्येक गांव की महिलाएं गृहिणी व खेती के साथ–साथ स्वयं सहायता समूह के माध्यम से अन्य कार्य आसानी से कर रही है। जिससे उनकी आय में वृद्धि होने लगी है। एक अध्ययन के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं जो परिवार का प्रमुख आधार बन रही है, जिनका 70 प्रतिशत महिलाएं नौकरी या खुद का व्यवसाय या मजदूरी कर रही हैं।

वर्तमान में ग्रामीण विकास में महिला उद्यमी पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार है। दुनिया एवं देश के विकास में महिलाएं उन क्षेत्रों में भी बढ़–चढ़कर योगदान दे रही है। जहाँ केवल पुरूषों का वर्चस्व माना जाता था, आज महिला उद्यमी हर व्यवसाय को मुनाफे में बदलकर विकास में अपना योगदान दे रही हैं। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिला उद्यमी की स्थिति अनुकूल नहीं हैं। महिलाओं को व्यवसाय में जाने के लिए पितृसत्तात्मक समाज द्वारा बंदिश लगाई जाती है।

(2) पशुपालन– भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन को रीढ़ की हड्डी मानी गयी है। महिलाएं कृषि कार्यों के साथ पशुपालन का कार्य आसानी से कर रही है। जिससे एक और कृषि कार्यों के लिए पशु तथा खाद प्राप्त हो रहे है, वहीं महिला उद्यमी दुध, दही, घी और गोबर के कण्डे व गोबर से विभिन्न प्रकार के सामग्रियाँ बनाकर व्यवसाय करती है।

(3) लघु एवं कुटीर उद्योग– आज देश भर में लघु एवं कुटीर उद्योगों में महिला उद्यमियों की संख्या अधिक है जिसमें आचार, पापड़, चिप्स,नमकिन, मसाला उद्योग जैसे उद्योगों को संचालित कर रहीं है।

(4) वानिक उद्यम– ग्रामीण जंगल क्षेत्रों में महिलाएं वानिकी उद्यम से रबर, लाख, रेशम, फल, जड़ी–बुटी, तेन्दुपत्ता, महुआ, वनोपज के संग्रहण आदि कार्य कर विकास में योगदान दे रहीं हैं।

भारत में महिला उद्यमिता की पृष्ठभूमि

भारत के व्यापक एमएसएमई पंजीकरण मंच उद्यम के हालिया आंकड़े देश के आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महिला स्वामित्व वाले व्यवसायों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हैं। वर्तमान में महिलाओं के स्वामित्व वाले एमएसएमई सभी उद्यम पंजीकृत इकाइयों द्वारा उत्पन्न कुल रोजगार में 18.73 प्रतिशत का प्रभावशाली योगदान देते हैं। मूल रूप से, हम महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों की ओर से रोजगार सृजन, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और स्थिरता के मामले में एक अमूल्य योगदान देख रहे हैं।

उद्यमिता के जरिए ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण

ग्रामीण उद्यमिता के जरिए ग्रामीण महिलाओं को नए आर्थिक अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। साथ ही, अर्थव्यवस्था के विकास में इसकी अहम भूमिका हो सकती है। उद्यमी के तौर पर काम कर रहीं महिलाएं अपने परिवार की आर्थिक बेहतरी और गरीबी कम करने में योगदान कर सकती है। साथ ही, वे संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास से जुड़े पांचवें लक्ष्य को हासिल करने में भी भूमिका निभा सकती हैं, जिसके तहत महिलाओं के सशक्तीकरण की बात है। ग्रामीण महिलाएं उद्यम से जुड़े ऐसे क्षेत्र में काम करतीं है.

जहां जोखिम कम होता है और संगठन संबधी कौशल की भी ज्यादा जरूरत नहीं होती है, मसलन डेयरी उत्पादों, अधार फल जूट, पापड़, गुड आदि तैयार करना। हालांकि, एमएसएमई क्षेत्र में महिला उद्यमियों की संख्या कम है। इस क्षेत्र में महिलाओं का हिस्सा कुल पंजीकृत उद्यमों का तकरीबन 14 प्रतिशत है। इसके तहत 57,452 इकाइयों में कुल 18,848 महिला उद्यमी हैं। महिलाओं के नाम पर पंजीकृत सबसे ज्यादा उद्यम तमिलनाडु (9,618) में है। इसके बाद क्रमशः उत्तर प्रदेश (7.980), केरल (5.487), पंजाब (4.791), महाराष्ट्र (4.339) गुजरात (3,872), कर्नाटक (3,822) और मध्य प्रदेश (2,967) का स्थान है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमियों की संख्या कम होने की कई वजह हैं, जैसे कि घर और कारोबार की बाहरी ज़िम्मेदारी की चुनौती, संसाधनों पर मालिकाना हक का अभाव, ज्ञान, कौशल और उद्यमिता संबंधी प्रेरणा की कमी, शिक्षा का अभाव जोखिम लेने की क्षमता और परिवारिक सहयोग की कमी, सामाजिक–सांस्कृतिक बंदिशे, वित्तीय सहायता मिलने में दिक्कत, वित्तीय स्वतंत्रता का अभाव, आधारभूत संरचना की गड़बडी, मार्केटिंग संबंधी क्षमता का अभाव आदि।

महिला उद्यमियों के विकास के लिए सरकार की पहल

आजादी के बाद से ही महिलाओं का विकास सरकार का मिशन रहा है। 80 के दशक की शुरूआत से ही स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार ध्यान देने वाले क्षेत्र थे। महिलाआ को हर क्षेत्र में वरीयता दी जाती है सरकार और अन्य ऐजेंसियों ने नियमित रूप से स्वरोजगार और औद्योगिक उपक्रमों के माध्यम से महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के प्रयास किए है।

भारत में जहाँ 15.7 मिलियन से अधिक महिला स्वामित्व वाले उद्यम है, और महिलाएं स्टार्प–अप पारिस्थितिक यंत्र चला रही हैं, महिला उद्यमिता जोर पकड़ रही है अनुमान है कि अगले 5 वर्षो के दौरान यह संख्या 90 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी। उनके बढ़ते उत्साह के

शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय, गुण्डरदेही,जिला–बालोद (छ.ग.)

एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर, राजनीति विज्ञान 2023–24

ग्रामीण क्षेत्र में हथकरघा से सम्बंधित महिला बुनकर सदस्यों से प्राप्त जानकारी –

1) ग्रामीण क्षेत्रों में हथकरघा उद्योग की कितनी आवश्यकता कितनी है?

उत्तर– ग्रामीण क्षेत्रों में हथकरघा उद्योग की अधिक आवश्कता है ताकि ग्रामीण क्षेत्र के महिलाओं और पुरुषों को रोजगार का साधन उपलब्ध हो सके।

2) हथकरघा उद्योग के विकास के लिए सरकार के क्या प्रयास रहे हैं?

उत्तर– हथकरघा उद्योग के लिए सरकार का बहुत अच्छा प्रयास रहा है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को रोजगार प्राप्ती के लिए साधन उपलब्ध करा रही है जिससे ग्रामीण क्षेत्र के महिलाओं का आर्थिक स्थिति सुधार रही है।

3) महिला बुनकर समिति को कच्चे माल कहां से उपलब्ध होता है?

उत्तर– महिला बुनकर समिति को कच्चा माल छत्तीसगढ़ राज्य हथकरघा विकास विपन्न सहकारी संघ मर्या॰ रायपुर से प्राप्त होता है।

4) हथकरघा उद्योग से वने कपड़ो की वाजार में कितनी माँग है?

उत्तर– हथकरघा उद्योग से बने कपड़े की माँग बहुत अधिक हो गया है हर क्षेत्र के दुकानों व बाजारों में हथकरघा उद्योग से बने साड़ी व कपड़ा मिल जाता है।

5) गांव में संचालित महिला बुनकर समिति से महिलाओं को कितना लाभ हुआ?

उत्तर– गांव में संचालित महिला बुनकर समिति से महिलाओं को रोजगार का साधन उपलब्ध हुआ। और महिलाए घर बैठे रोजगार कर

गुण्डरदेही ब्लाक के ग्राम कांदुल में संचालित महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिक पार्क में रीपा (रूरल इंडस्ट्रियल पार्क) के तहत महिला समूह द्वारा खाद्य सामग्री तैयार किया जाता है जिनसे यह जानकारी प्राप्त हुई –

1) गांव में महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिक पार्क की स्थापना कब हुई ?

उत्तर– गांव में महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिक पार्क की स्थापना 25 मार्च 2023 में हुई, जिसमें वसुंधरा राईस प्रोडक्ट सहकारी समिति द्वारा कार्य किया जाता है।

2) यह ग्रामीण औद्योगिक पार्क सरकार के किस योजना के अंतर्गत स्थापित किया गया है ?

उत्तर– यह राज्य सरकार के महत्वकांक्षी योजना गौठान से संचालित महात्मा गांधी रूरल इंडस्ट्रियल पार्क (रीपा) योजना के अंतर्गत स्थापित किया गया है।

3) महिला समूह द्वारा कौन–कौन से खाद्य सामग्री तैयार की जाती है और इसके लिए कच्चा माल कहाँ से उपलब्ध होता है?

उत्तर– महिला समूह द्वारा चांवल पापड़, लहसुन पापड़, जीरा पापड़ और दाल पापड़ जैसे खाद्य सामग्री तैयार की जाती है। इसके लिए कच्चा माल देवा राइस मिल कोटगाँव से उपलब्ध होता है।

4) महिलाओं द्वारा तैयार की गई उत्पादक सामग्रियों का विक्रय व बाजार व्यव्स्था किस प्रकार है?

उत्तर– महिलाओं द्वारा तैयार की गई खाद्य उत्पादक सामग्रियों को दुर्ग, बालोद, रायपुर और अन्य स्थानीय बाजारों में सप्लाई किया जाता है साथ ही अर्जुंदा व गुण्डरदेही के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में मांग के अनुरूप खाद्य सामग्री पहुँचाया जाता है।

5) पहले समूह की महिलाएं क्या कार्य करती थीं? ग्रामीण औद्योगिक पार्क के निर्माण से महिलाओं को कितना लाभ हुआ?

उत्तर– पहले महिलाएं खेती-बाड़ी और बिहान योजना के समूह में कार्य करती थीं जिससे उन्हे कम आमदनी होती थी। गांव में औद्योगिक पार्क के निर्माण से समूह की महिलाओं को रोजगार मिला, और अच्छी खासी आमदनी भी मिल रही है। इस रोजगार के जरिए महिलाएं स्वावलंबी बनने की ओर अग्रसर होने लगी है।

निष्कर्ष

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास से ही सम्पूर्ण विकास को आगे बढाया जा सकता है। आज भारत में महिला पुरुषों के साथ बराबर हर कार्य कराने को तत्पर है। पुरुषों द्वारा महिलाओं को व्यवसाय तथा अन्य कार्य निष्पादित करने की आजादी देने की आवश्यकता है। आज देश में महिलाएँ लघु एवं कुटीर उद्योग के माध्यम से तथा फेरी लगाकर भी अपना व्यवसाय कर पारिवारिक जीवन को कुशल बना रही है। महिलाओं एवं पुरुषों की प्रतिस्पर्धात्मक भागीदारी के द्वारा नहीं बल्कि पूरक सहभागिता द्वारा ही ग्रामीण विकास और समाज का विकास को दृढ़तर किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र का विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा। महिलाओं का विकास और महिला के सशक्त होने पर समाज का विकास स्वतः हो जाएगा।

शोधकार्य में **हथकरघा उद्योग, ग्रामीण औद्योगिक पार्क और जूट प्रशिक्षण शिविर** से सर्वे के माध्यम से जानकारी प्राप्त किया गया। जिसमें यह पाया गया कि **ग्राम नाहंदा में महिला बुनकर समिति** के माध्यम से महिलाओं को रोजगार मिलने के साथ उनकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत हुई है। पहले महिलाएं रोजगार के लिए भटकती थी और खेतों में मजदूरी कर जीवन यापन करती थीं। साथ ही **ग्राम कांदूल में ग्रामीण औद्योगिक पार्क** के निर्माण से महिलाओं को रोजगार व अच्छी आमदनी मिलती हैं। वें राइस पापड़ बनाकर अलग अलग क्षेत्रों में विक्रय करते हैं। तकनीकी और कार्य के कमी के कारण 5 महिलाएं ही कार्य कर रही है। **जूट शिल्प प्रशिक्षण शिविर अंडा (दुर्ग)** के ग्राम पंचायत में महिलाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिसमें महिलाएं प्रशिक्षण के बाद स्वरोजगार के जरिए अच्छी आमदनी अर्जित कर सकती है। अब ग्रामीण महिलाएं खुद अपनी मेहनत और लगन से उन्नति कर रही है। और समाज में आत्मनिर्भर होकर सम्मान जनक जीवन जी रही है और **ग्रामीण विकास व समाज के विकास** में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

अंत में कहा जा सकता है कि **महिला उद्यमिता** नारी शक्ति की विकास का आधार स्तम्भ है। आज इस महंगाई के युग में अकेले कमाने वाले व्यक्ति से अच्छे जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। महिलाओं को घर की जिम्मेदारी के साथ अन्य कार्यों में संलग्नता आवश्यक है। महिला उद्यमियों की छोटी–छोटी समस्याओं का समाधान कर दिया जाए तो महिला उद्यमियों द्वारा उत्कृष्ट निष्पादन प्राप्त कर सकते हैं। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की जीवनशैली में आमूलचूल परिवर्तन होगा तथा ग्रामीण विकास के साथ देश का विकास भी होने लगेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- कुरुक्षेत्र पत्रिका (जनवरी 2024) प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
- योजना पत्रिका, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
- राज्य महिला उद्यमिता नीति 2023–28
- कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार
- न्यूज़ पेपर, दैनिक भास्कर
- https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-editorials/female-entrepreneurs-in-india
- www.investindia.govt.in
- www.naiduniya.com
- www.jetir.org

बाह्य परीक्षक
10-4-2024.

आन्तरिक परीक्षक
[illegible]/05/24

संदर्भ ग्रंथ सूची

- कुरुक्षेत्र पत्रिका (जनवरी 2024) प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
- योजना पत्रिका, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
- राज्य महिला उद्यमिता नीति 2023–28
- कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार
- न्यूज पेपर, दैनिक भास्कर
- https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-editorials/female-entrepreneurs-in-india
- www.investindia.govt.in
- www.naiduniya.com
- www.jetir.org

बाह्य परीक्षक
10-4-2024.

आन्तरिक परीक्षक
[illegible]/05/24